Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **27.03.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

वह काम जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे नियुक्त किया है, वह यह है कि ख़ुदा में तथा उसके बन्दों के सम्बंधों में जो रुकावट हो गई है उसको दूर करके प्रेम एंव निष्ठा के सम्बंध को पुनः स्थापित करूं। दीन की सच्चाइयां जो दुनिया की आँख से छुप गई हैं उनको ज़ाहिर कर दूँ और रूहानियत जो तामसिक मनोवृत्तियों के नीचे दब गई है उसका नमूना दिखलाऊँ।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आने के उद्देश्य की जिन पाँच शाखाओं का वर्णन फ़रमाया है उनमें से एक शाखा इश्तिहार भी है। अर्थात तबलीग़ और निरुत्तर करने के लिए इश्तिहार का प्रकाशन। एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं।

आज मैं ने निरोत्तर करने का निश्चय किया है कि विरोधियों तथा इंकार करने वालों के सम्बोधन में चालीस इश्तिहार प्रकाशित करूं ताकि क़यामत के दिन मेरी ओर से ख़ुदा के समक्ष यह पूर्ण प्रमाण हो कि मैं जिस काम के लिए भेजा गया था उसको मैं ने पूरा किया और फिर ये कुछ इश्तिहार नहीं अथवा एक बार ही नहीं बल्कि यदि देखा जाए तो अपने दावे के पहले से लेकर वफ़ात तक आपने असंख्य इश्तिहार प्रकाशित किए और ये सब मज़हब की दुनिया का एक ख़ज़ाना हैं। आपकी एक तड़प थी कि मुसलमानों को भी, ईसाइयों को भी तथा अन्य धर्मों के मानने वालों को भी तबाह होने से बचाएं। आप अकेले यह काम करते थे तथा इसके लिए कठोर परिश्रम करते थे। आपकी बड़ी बड़ी पुस्तकें तो हैं ही, आपकी बन्दों के प्रति सहानुभूति छोटे छोटे इश्तिहारों के द्वारा भी दुनिया के सुधार का दर्द प्रकट करती है। दुनिया के सुधार के लिए इस दर्द को क़ायम रखना तथा आगे चलाना, यह आपकी जमाअत के लोगों का भी कर्तव्य है इस लिए इसकी ओर ध्यान देते रहना चाहिए। एक स्थान पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस दर्द और इसके लिए घोर परिश्रम के बारे में फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उदाहरण हमारे सामने है। बीमारी के बावजूद आप दिन रात लगे रहते थे और इश्तिहार पर इश्तिहार देते रहते थे। लोग आपके काम को देखकर हैरान रह जाते थे। एक इश्तिहार देते थे उसका प्रभाव दूर नहीं होता था और इसके कारण जो विरोध में जोश पैदा होता था, वह भी कम न होता था कि दूसरा इश्तिहार आप प्रकाशित कर देते थे। यहां तक कि कुछ लोग कहते थे कि ऐसे अवसर पर कोई इश्तिहार देना अन्य लोगों की मानसिकता पर बुरा प्रभाव डालेगा। परन्तु आप इसकी चिंता न करते और फ़रमाया करते थे कि लोहा गरम ही कूटा जा सकता है। और ज़रा जोश ठंडा होने लगता तो तुरन्त दूसरा इश्तिहार प्रकाशित फ़रमा देते थे जिसके कारण फिर विरोध की भट्टी गरम हो जाती। आपने रात दिन इसी प्रकार काम किया और यही सफलता का माध्यम है। यदि हम यह माध्यम अपना लें तो सफल हो सकते हैं। इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि विरोध कम हो जाए। विरोध होता रहे तो साथ साथ इश्तिहार भी आते रहें, तब ही प्रभाव भी पड़ता है। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने का ही वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में तबलीग़, इश्तिहारों के द्वारा होती थी, वे इश्तिहार दो चार पृष्ठों के होते थे तथा उनके द्वारा देश में तहका मचा दिया जाता था, उनका अधिकांश संख्या में प्रकाशन किया जाता था।

तीन चार साल पहले मैं ने जमाअतों को कहा था कि एक दो पृष्ट बनाकर तबलीग़ का काम करें तथा इसका टार्गेट भी दिया था कि लाखों की संख्या में होना चाहिए जिसके कारण इसलाम की सुन्दर शिक्षा दुनिया को पता चले। दुनिया को यह पैग़ाम मिले कि इसलाम की वास्तविकता क्या है, दुनिया को सन्देश मिले कि इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेज कर इसलाम का पुर्नोद्धार फ़रमाया है तथा वास्तविक शिक्षा को जारी फ़रमाया है। यह दुनिया को पता लगे कि अब भी ख़ुदा तआला अपने बन्दों को शैतान से बचाने के लिए अपने दूत भेजता है। इस प्रकार जिन जमाअतों ने इस विषय में काम किया, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से, बड़े सकारात्मक परिणाम वहां निकले हैं। स्पेन में जामिअः के विद्यार्थियों को मैं ने भेजा था, उन्होंने बड़ा काम किया वहां और लगभग तीन लाख विभिन्न पफ़्लैट बांटे। इसी प्रकार अब जामिअः कैनेडा के विद्यार्थियों ने स्पेनिश देशों में तथा मैक्सिको में जाकर यह इश्तिहार बांटे और अल्ला तआला के फ़ज़ल से इसके द्वारा तबलीग़ के मैदान भी विस्तृत हुए हैं और बैअतें भी हुई हैं। अतः इसके लिए एक के बाद दूसरा पर्चा प्रकाशित होते रहना चाहिए तथा इसको बांटते चले जाना चाहिए। बजाए इसके कि बड़ी बड़ी किताबें बांटी जाएं। अब हज़रत मुस्लेह मौऊद के कुछ वृत्तांत जो हैं, सहाबा से अथवा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सम्बंध में, वे विभिन्न प्रकार के हैं, वे पेश करता हूँ।

एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं कि जब अफ़ग़ानिस्तान के शहीदों पर पत्थर पड़ते थे तो वे घबराते नहीं थे बल्कि दृढ़ता एंव शौर्य

के साथ उनको स्वीकार करते थे और जब उन पर अत्यधिक पत्थर पड़े तो साहिबज़ादा अब्दुल्लतीफ़ साहब शहीद, नेअमतुल्लाह ख़ान साहब शहीद तथा अन्य शहीदों ने यही कहा कि या इलाही, इन लोगों पर रहम कर और इन्हें हिदायत दे। बात यह है कि जब प्रेम भावना इंसान के अन्दर हो तो उसका रंग ही बदल जाता है, उसकी बात में आकर्षण पैदा हो जाता है तथा उसके प्रकाश्मयी चेहरे की किरणें लोगों को खींच लेती हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मुझे याद है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में यहां, अर्थात क़ादियान में हज़ारों लोग आए और उन्होंने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा तो यही कहा कि यह मुंह झूठों का नहीं हो सकता। उन्होंने एक शब्द भी आपके मुंह से न सुना और ईमान ले आए। तो ये उदाहरण आजकल भी हमें दिखाई देते हैं, कई पत्र आते हैं मुझे और जिनमें यह वर्णन होता है कि जब हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र देखा तो देख कर ही यह कहा कि यह मुंह झूठे का नहीं हो सकता और बैअत कर ली।

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि तीन प्रकार के लोग हमारी जमाअत में शामिल हैं। अतः पहली प्रकार तो वह है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं, कि जो मेरे दावे को समझ कर और सोच विचार के बाद अहमदी हुए हैं। वे जानते हैं कि मेरी नियुक्ति का उद्देश्य क्या है? तथा वे समझते हैं कि जिस प्रकार पहले नबियों की जमाअतों ने क़ुरबानियां की हैं उसी रंग में हमें भी क़ुरबानियां करनी चाहिएं परन्तु कुछ अन्य लोग हैं जो केवल हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब के कारण हमारे सिलसिले में दाख़िल हुए हैं। उनको मेरी नियुक्ति का कारण नहीं पता परन्तु वे केवल इस कारण से दाख़िल हुए हैं कि हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की है। इसके अतिरिक्त एक तीसरी जमाअत कुछ नौजवानों की है जिनके दिलों में यद्यपि मुसलमानों का दर्द था परन्तु क़ौम के रूप में न कि मज़हब के कारण। वे चाहते थे कि मुसलमानों का कोई जत्था हो अर्थात धर्म के कारण कोई दर्द नहीं था परन्तु मुसलमानों की स्थिति देख कर चाहते थे कि कोई जत्था हो, एक जुट हों। तो ऐसे लोग भी शामिल हुए जमाअत में क्यूंकि सामान्य मुसलमानों का कोई जत्था बनाना उनके लिए असम्भव था इस लिए जब उन्होंने हमारे निकट एक जत्था देखा तो वे हम में आए और अब वे चाहते हैं कि मदर्से स्थापित करें तथा लोग डिग्रियां प्राप्त करें। इसी कारण से वे हमारे सिलसिले को एक अंजुमन समझते हैं, मज़हब नहीं समझते। तो दुनिया में प्रगति के जो साधन समझे जाते हैं वे बिल्कुल अलग हैं तथा दीन की उन्नति के जो साधन समझे जाते हैं वे बिल्कुल अलग हैं। संस्थाएं अन्य प्रकार से प्रगति करती हैं तथा दीन अलग प्रकार से। दीन की उन्नति के लिए आवश्यक चीज़ है, आचरण ठीक हो, उच्च स्तरीय सदाचार हो। क़ुर्बानी तथा बलिदान की भावना पैदा की गई हो, नमाज़ें पढ़ी जाएं ताकि रूहानियत में उन्नति हो, रोज़े रखे जांए, अल्लाह तआला पर पूर्ण भरोसा पैदा किया जाए, उसकी आज्ञा पालन की प्रतिज्ञा की जाए। यदि हम ये सारी बातें करेंगे तो दुनिया की दृष्टि में तो हम पागल समझे जांएगे परन्तु ख़ुदा तआला की दृष्टि में हमसे अधिक बुद्धिमान और कोई नहीं होगा। इस लिए सारे शुभ आचरण तथा आध्यात्मिकता में प्रगति, ये चीज़ें दीन की जमाअतों में होनी चाहिएं। अतः हर अहमदी को अपने ईमानदारी के स्तरों को, रूहानियत के स्तरों को अत्यध्कि ऊंचा करने की आवश्यकता है।

फिर एक वृत्तांत आप तअलीमुल इस्लाम हाई स्कूल की स्थापना की पृष्ट भूमि तथा आवश्यकता बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि एक वह ज़माना था जब तअलीमुल इस्लाम कालिज का शुभारम्भ हुआ। उस समय यह सोच हो रही थी इतने लाख रुपए हमें तुरन्त चाहिएं तथा इतने लाख की वार्षिक आमदनी होनी चाहिए ताकि कालिज जारी रखा जाए तथा बड़ी बड़ी लाखों की योजनाएं बन रही थीं। तो उस समय आप फ़रमाते हैं कि एक वह ज़माना था कि हमारे लिए हाई क्लासिज़ को जारी रखना भी कठिन था। यहां आर्यों का मिडिल स्कूल हुआ करता था, क़ादियान में। आरम्भ में उसमें हमारे लड़कों ने प्रेवश लिया तो आर्य मास्टरों ने उनके सामने लैक्चर देने शुरु किए कि तुमको गोश्त नहीं खाना चाहिए, हिन्दु गोश्त नहीं खाते, गोश्त खाना पाप है। वे इस प्रकार की आपत्तियां करते जो कि वास्तव में इस्लाम पर हमले थे। लड़के स्कूल से आते तथा ये आक्षेप बतलाते। फ़रमाते हैं कि यहां एक प्राइमरी स्कूल था क़ादियान में, उसमें भी अधिकतर टीचर आर्य थे और यही बातें सिखलाया करते थे। पहले दिन जब मैं सरकारी प्राइमरी स्कूल में पढ़ने गया, अर्थात हज़रत मुस्लेह मौऊद अपना बयान फ़रमा रहे हैं, और दोपहर को मेरा खाना आया तो मैं स्कूल से बाहर निकल कर एक पेड़ के नीचे जो वहीं पास में ही था, खाना खाने के लिए जा बैठा। मुझे अच्छी प्रकार याद है कि उस दिन कलेजी पक्की हुई थी और वही मेरे खाने में भिजवाई गई। उस समय मियां उमर दीन साहब मरहूम जो मियां अब्दुल्लाह साहब के वालिद थे, वे भी इसी स्कूल में पढ़ा करते थे। परन्तु वे बड़ी क्लास में थे और मैं पहली क्लास में था। मैं खाना खाने बैठा तो वे भी आ पहुंचे और देख कर कहने लगे। हैं मांस खादे ओ मांस। जब कि वे मुसलमान थे। इसका यही कारण था कि आर्य मास्टर सिखलाते थे कि मांसाहार पाप है तथा बड़ी बुरी चीज़ है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि 1944 में मैं ने कालिज की आधार शिला रखी थी क्यूंकि अब समय आ गया था कि हमारी आगे आने वाली पीढ़ी की उच्च शिक्षा हमारे हाथ में हो। एक ज़माना वह था कि हमारी जमाअत में बहुत छोटे ओहदे तथा बहुत कम आय वाले लोग शामिल थे। निःसन्देह इसके द्वारा जमाअत के इतिहास का भी पता लगता है कि निःसन्देह कुछ लोग कालिजों में से अहमदी होकर जमाअत में शामिल हुए। परन्तु वे घटना के रूप में समझे जाते थे अन्था केवल कुछ लोगों को

छोड़ कर उच्च पदों वाले तथा उच्च आय वर्ग हमारी जमाअत में नहीं था। यह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सत्यता का एक प्रमाण है कि हमारी जमाअत में कोई बड़ा व्यक्ति शामिल नहीं। अतः कोई ई ए सी हमारी जमाअत में शामिल नहीं। उस समय के अनुसार सम्भवतः ई ए सी गवरमिंट सर्विस एसिस्टैंट कमिश्नरों को कहते हैं। यह बहुत बड़ा आदमी होता था। परन्तु अब देखो, हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं, देखो अब ई ए सी गलियों में फिरते हैं और उनकी ओर कोई आँख उठाकर भी नहीं देखता। लेकिन एक समय पर हमारी जमाअत में उच्च स्तर वर्ग के लोगों की इतनी कमी थी कि हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ने फ़रमाया कि हमारी जमाअत में कोई बड़ा आदमी दाख़िल नहीं। इस प्रकार कोई ई ए सी हमारी जमाअत में दाख़िल नहीं। अतः उस समय के अनुसार हमारी जमाअत ई ए सी को भी सहन नहीं कर सकती थी।

आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुनिया में सैंकड़ों स्कूल तथा कालिज जमाअत के चल रहे हैं और आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बड़े बड़े निपुण व्यक्ति तथा अधिकारी भी जमाअत में शामिल हैं, दुनिया के विभिन्न देशों में। देश की विभिन्न पार्लिमैंटों के मेम्बर अहमदी हैं तथा निष्ठावान भी हैं। यह नहीं कि दुनियादारी उनमें आई हुई है बल्कि अफ़्रीक़ा में तो कुछ देशों में कुछ मुज़्य मंत्रालयों पर भी अहमदी नियुक्त हैं। तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों में से यह भी एक फ़ज़्ल है, किस प्रकार अल्लाह तआला प्रगति दे रहा है। आरम्भिक अहमदियों पर कठिनाइयों और फिर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं कि एक ज़माना था जबकि अहमदी जमाअत पर चारों ओर से कटुता पूर्ण व्यवहार किया जाता था, बहुत आरम्भिक ज़माने में। मौलवियों ने फ़तवा दिया कि अहमदियों की हत्या कर देना, उनके घरों को लूट लेना, उनकी सम्पत्तियों को छीन लेना, उनकी महिलाओं का तलाक़ के बिना दूसरे के साथ निकाह कर देना उचित ही नहीं बल्कि पुण्य का काम है। हर सुबह जो आती है अपने साथ ताज़ा ताज़ा परीक्षाएं और ताज़ा ताज़ा दायित्व लाती और हर शाम जो पड़ती अपने साथ ताज़ा परीक्षा तथा ताज़ा दायित्व लाती परन्तु अलैसल्लाहु बिकाफ़िन अब्दहु की हवा सब चिंताओं को घास फूंस की भांति उड़ा कर फेंक देती और वह बादल जो आरम्भिक सिसिले की इमारत की बुनियादों को उखाड़ कर फेंक देने की धमकी देते थे थोड़ी ही देर में रहमत और फ़ज़्ल के बादल हो जाते और उनकी एक एक बूंद के गिरते समय अलैसल्लाहु बिकाफ़िन अब्दहु की साहस वर्धक आवाज़ पैदा होती। अर्थात इतना अत्याचार था परन्तु फिर भी यह विश्वास था कि अल्लाह तआला हमारे लिए काफ़ी है और इन्शाअल्लाह हालात बदलेंगे। यदि कुछ कठिनाइयां आती भी हैं तो अलैसल्लाहु बिकाफ़िन अब्दहु की आवाज़ भी सहारा बनती है हमारा। दुनिया के कोने कोने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लंगर स्थापित हैं। इस प्रकार अल्लाह तआला ने न कभी हमें छोड़ा है, न कभी छोड़ेगा, इन्शाअल्लाह। यदि हम उसके साथ चिमटे रहें। निःसन्देह क़ुर्बानियां देनी पड़ती हैं और अहमदी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से देते हैं लेकिन हर क़ुर्बानी अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को लिए हुए एक नया रास्ता हमें दिखाती है। अल्लाह तआला अपने देने में कभी कमी नहीं करता।

फिर अल्लाह तआला की ओर से सुरक्षा प्रबन्ध के विषय में एक घटना बयान फ़रमाते हैं, हज़रत मुस्लेह मौऊद। फ़रमाते हैं कि एक उदाहरण अल्लाह की सुरक्षा का मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन में से पेश करता हूँ। क़मर सैन साहब जो लॉ कालिज लाहौर के प्रिन्सिपल हैं उनके वालिद साहब से हज़रत साहब को बड़ा प्रेम था यहां तक कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कभी रुपए की आवश्यकता होती तो कई बार उनसे कर्ज़ भी ले लिया करते थे, ये क़मर सैन साहब हिन्दु थे, उनको भी हज़रत साहब से बड़ी श्रद्धा थी।

जेहलम के मुक़दमे में उन्होंने अपने बेटे को तार दी थी कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर से वकालत करें। इस श्रद्धा का कारण यह था कि उन्होंने अपनी जवानी के दिनों में जब वे तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने कुछ मित्रों के साथ सियालकोट में इकटठे रहते थे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कई चमत्कार देखे थे। अतः उन निशानों में से एक यह है कि एक रात आप दोस्तों के साथ सो रहे थे कि आपकी आँख खुली अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की और दिल में डाला गया कि मकान ख़तरे में है। आपने उन सब दोस्तों को जगाया और कहा कि मकान ख़तरे में है, इसमें से निकल चलना चाहिए। सब दोस्तों ने नींद के कारण ध्यान न दिया तथा यह कह कर सो गए कि आपको भ्रम हो गया है। परन्तु आपका आभास निरंतर बढ़ता करता रहा, अतः आपने फिर उनको जगाया तथा ध्यान दिलाया कि छत में से चड़चड़ाहट की आवाज़ आती है, मकान छोड़ देना चाहिए। उन्होंने कहा यह छोटी बात है इस प्रकार की आवाज़ें कई बार लकड़ी में कीड़ा लगने से आया करती हैं, आप हमारी नींद क्यूं ख़राब करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फिर कहा कि अच्छा आप लोग मेरी बात मानकर ही निकल चलें। अन्ततः विवश होकर लोग निकलने पर तैय्यार हो गए। हज़रत साहब को क्यूंकि विश्वास था कि ख़ुदा मेरी सुरक्षा के कारण मकान को गिरने से रोके हुए है इस लिए आपने उन्हें कहा कि पहले आप निकलो बाद में मैं निकलूंगा। जब वे निकल गए और बाद में हज़रत साहब निकले तो आपने एक क़दम सीढ़ी पर रखा ही था कि छत गिर गई। फिर इसी प्रकार अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ व्यवहार की एक अन्य घटना बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि एक बार मैं अमृतसर से यक्के पर सवार होकर रवाना हुआ। एक बड़ा मोटा ताज़ा हिन्दु भी मेरे साथ ही यक्के पर सवार हुआ और मुझ से पहले यक्के के अन्दर बैठ गया तथा अपने

आराम के लिए अपनी टांगों को चौड़ा करके फैला लिया। यहां तक कि अगली सीट जहां मैं ने बैठना था वह भी बन्द कर दी, उसमें भी रोक डाल दी। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं थोड़ी सी जगह में बैठा। उन दिनों धूप बड़ी तेज़ पड़ती थी कि इंसान के होश उड़ जाते थे। मुझे धूप से बचाने के लिए अल्लाह तआला ने क्या प्रबन्ध किया कि एक बदली भेजी जो हमारे यक्के के साथ साथ साया करती हुई बटाला तक आई। यह दृश्य देखकर वह हिन्दु कहने लगा कि आप तो ख़ुदा तआला के नेक बन्दे लगते हैं।

इस प्रकार अल्लाह तआला अपने बन्दों से ऐसा सलूक करता है कि इंसान चकित रह जाता है परन्तु बन्दगी शर्त है और इंसान का अंजाम अवश्य शुभ होगा। प्रत्यक्षतः वह दुनिया की, केवल प्रत्यक्ष को देखने वाली दृष्टि में अपमानित होता दिखाई दे रहा होगा परन्तु अन्ततः उसको सम्मान प्राप्त होगा। प्रत्यक्ष में वह बदनाम भी हो रहा होगा परन्तु अन्ततः नेक नामी उसको प्राप्त होगी। मानो कि उस व्यक्ति का आरम्भ बन्दगी से तथा अन्त सहायता पर समाप्त होगा अर्थात यदि अल्लाह तआला को पक्का बन्दा बन कर उसकी इबादत की जाए, उसकी बन्दगी धारण की जाए, अल्लाह तआला की सहायात फिर अवश्य मिलती है और अल्लाह तआला फिर हर बुराई के विरुद्ध सहायता फ़रमाता है।

एक सामान्य पीर तथा अल्लाह तआला के भेजे हुए दूत के नेक प्रभाव डालने तथा नेकियां बांटने तथा अपने चेलों का उद्धार करने तथा इंसानियत के लिए दर्द में क्या अन्तर होता है इसका एक उदाहरण देते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुन्शी अहमद जान साहब लुधियाना वाले का वर्णन करते हुए कि हज़रत मुन्शी अहमद जान साहब लुधियाना वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे से पहले ही सिधार गए थे परन्तु उनकी दिव्य दृष्टि इतनी तीव्र थी कि उन्होंने दावे से पहले ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लिखा कि-

हम मरीज़ों की है तुम्हीं पे निगाह तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए

अतः प्रत्यक्षतः रूहानी लोग उस व्यक्ति का मुक़ाबला नहीं कर सकते जिसको विशेष रूप से अल्लाह तआला ने इस काम के लिए नियुक्त किया हो कि संसार का सुधार करना है, उसकी आध्यात्मिकता में वृद्धि करनी है, उसे ख़ुदा तआला के निकट लाना है जैसा कि स्वंय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि वह काम जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे नियुक्त किया है, वह यह है कि ख़ुदा में तथा उसके बन्दों के सम्बंधों में जो रुकावट हो गई है उसको दूर करके प्रेम एंव निष्ठा के सम्बंध को पुनः स्थापित करूं। दीन की सच्चाइयां जो दुनिया की आँख से छुप गई हैं उनको ज़ाहिर कर दूँ और रूहानियत जो तामसिक मनोवृत्तियों के नीचे दब गई है उसका नमूना दिखलाऊँ। फ़रमाया- और सबसे अधिक यह कि वह शुद्ध एंव चमकती हुई तौहीद जो हर एक शिर्क की मिलावट से ख़ाली है, जो अब अदृश्य हो चुकी है उसका पुनः क़ौम में सदा के लिए पौधा लगा दूँ।

अल्लाह तआला हमें सामर्थ्य प्रदान करे कि बैअत का हक़ अदा करते हुए ख़ुदा तआला से सम्बंध स्थापित करने वाले हों , दीन की सत्यता को पहचान कर उसके अनुसार कर्म करने वाले हों तथा तौहीद की वास्तविक चमक से लाभान्वित होने वाले हों। अल्लाह तआला दुनिया को भी इस पहचान की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और विशेष रूप से उम्मत-ए-मुस्लिमा को यह तौफ़ीक़ दे कि वह मसीह व मेहदी मौऊद अलैहिस्सलाम के दर्द को समझते हुए उसकी बैअत में आने की तौफ़ीक़ पाएं।

ख़ुत्बः जुम्मः के अन्त पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु ताआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुकर्रम नौमान अहमद अंजुम साहब पुत्र मुकर्रम चौधरी मक़सूद अहमद साहब जिनको कराची में विरोधियों ने दिनांक 21 मार्च 2015 को उनकी दुकान पर फ़ायरिंग करके शहीद कर दिया था। इसी प्रकार मुकर्रम इंजीनियर फ़ारूक़ अहमद ख़ान साहब नायब अमीर ज़िला पेशावर। ये शूरा के बाद रबवा से पेशावर जा रहे थे, गाड़ी को टायर फट गया जिसके कारण दुर्घटना हुई। तुरन्त चकवाल हस्पताल पहुंचाया गया, परन्तु बच न सके। हुज़ूर अनवर ने दोनों मरहूमों के विशिष्ट गुण तथा जमाअत की सेवा का वर्णन फ़रमाते हुए दुआ की तहरीक फ़रमाई तथा जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 27.03.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*